भक्ति दान गुरू दीजिए

भक्ति दान गुरू दीजिए,
देवन के देवा हो ॥
जन्म पाया न बिसरूं,
करिहूँ पद सेवा ॥

तीरथ वर्त मैं न करूँ,
ना देवल पूजा ॥
मनसा वाचा करमणा,
मेरे और ना दूजा ॥
भक्ति दान गुरू,,,,,,,,

अष्ट सिद्धि नौ निधि है,
बैकुण्ठ का वासा ॥
सो मैं कुछ ना माँगता,
मेरे समर्थ दाता ॥
भक्ति दान गुरू,,,,,,,,

सुख, सम्पति, परिवार, धन,
सुंदर वर नारी ।
सुपने में इच्छा न उठे,
गुरू आन तुम्हारी ॥
भक्ति दान गुरू,,,,,,,,

धर्मदास की विनती,
समर्थ सुन लीजै ॥
आवागमन निवार कै,
अपना कर लीजै ॥
भक्ति दान गुरू,,,,,,,,
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/20158/title/bhakti-daan-guru-dijiye

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |